

पंछीड़ा पावणा रे कांई बागा में मोयो रे देसी भजन लिरिक्स



आ दुनिया तो थारी,
बावळी रे बेंडा,
माया की मोटी,
छावनी रे बेंडा,
बातां में रह्यो बिलमाय,
पंछीड़ा पावणा रे कांई,
बागा में मोयो रे,
कांई माया में मोयो रे। **bd।**

सोने रे घड़े में विष घोलण,
आतो मीठी छूरी बण बोलणी रे,
आतो धोखा भरी संसार,
पंछीड़ा पावणा रे कांई,
बातां में खोयो रे,
कांई बागां में मोयो रे। **bd।**

पाछो ठिकाणे थने,
आवणो रे गेल्या,
कटू आयो ने कठे,
जावणो रे गेल्या,
गैलां में रह्यो रात,
पंछीड़ा पावणा रे,
कांई नींदा में सोयो रे,
कांई बागां में मोयो रे। **bd।**

नारी ठग्यो थारा,
रूप ने रे गेल्या,
काम कमाई ठगगी,
पूत ने रे गेल्या,
काया ठग्यो परिवार,
पंछीड़ा पावणा रे अठे,
आज ठगायो रे,
कांई बागां में मोयो रे। **bd।**



बालपणो रे हँस,
खोवियो रे बीरा,
जोर जवानी में,
सोवियो रे बीरा,
वेद न आया नहीं याद,
पंछीड़ा पावणा रे,
अब बुढ़ापे रोयो रे,
काई बागां में मोयो रे। **bd।**

भेरू शंकर समझाय,
रिया रे भेंडा,
आच्छा दिन थारा,
जाय रिया रे भेंडा,
हरि भज उतरौला पार,
पंछीड़ा पावणा रे,
अब मोड़ो नही होयो रे,
काई बागां में मोयो रे। **bd।**

आ दुनिया तो थारी,
बावळी रे बेंडा,
माया की मोटी,
छावनी रे बेंडा,
बातां में रहयो बिलमाय,
पंछीड़ा पावणा रे काई,
बागा में मोयो रे,
काई माया में मोयो रे। **bd।**

गायक – जगदीश जी वैष्णव ।
प्रेषक – रामेश्वर लाल पँवार ।
आकाशवाणी सिंगर ।
9785126052
